



NEERAJ®

समाचार पत्र और फीचर लेखन

(Newspaper and Feature Writing)

B.H.D.G.-173

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Vaishali Gupta



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com

Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

समाचार पत्र और फीचर लेखन (Newspaper and Feature Writing)

Question Paper—June-2024 (Solved)	1-5
Question Paper—December-2023 (Solved)	1-2
Question Paper—June-2023 (Solved)	1-3
Question Paper—December-2022 (Solved)	1-6
Question Paper—Exam Held in July-2022 (Solved)	1-3
Sample Question Paper–1 (Solved)	1-2
Sample Question Paper–2 (Solved)	1-2

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
--------------	-----------------------------------	-------------

समाचार पत्र और फीचर लेखन (Newspaper and Feature Writing)

1. समाचार पत्रों की दुनिया (The World of Newspapers)	1
2. समाचार पत्र के लिए लेखन की पद्धतियां	9
(The Methods of Writing for Newspapers)	
3. संपादकीय पृष्ठ के लिए लेखन (The Writing for Editorial Page)	18
4. समाचार संकलन, लेखन और संपादन	27
(News, Compilation, Writing and Editing)	
5. फीचर लेखन की विशेषताएं (Features of Feature Writing)	35

विभिन्न क्षेत्रों में और विशिष्ट विषयों पर फीचर लेखन

(Feature Writing in Different Areas and on Specific Topics)

6. यात्रा लेखन : विषय का चयन और प्रस्तुति	41
(Travels Writing : Selection and Presentation of Topic)	
7. सामाजिक और सांस्कृतिक फीचर लेखन : विषय का चयन और प्रस्तुति	48
(Social and Cultural Feature Writing: Selection and Presentation of Topic)	

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
8.	आर्थिक फीचर : विषय का चयन और प्रस्तुति (Economic Feature: Selection and Presentation of Topic)	57
9.	विज्ञान, पर्यावरण और स्वास्थ्य संबंधी फीचर : विषय का चयन और प्रस्तुति (Science, Environment and Health Related Feature: Selection and Presentation of Topic)	64
10.	खेलकूद में फीचर : विषय का चयन और प्रस्तुति (Feature in Sports : Selection and Presentation of Topic)	73
11.	समुदाय संबंधी फीचर : विषय का चयन और प्रस्तुति (The Community Features: Selection and Presentation of Topic)	81
विशिष्ट वर्गों के लिए लेखन (Writing for Specific Sections)		
12.	महिलाओं के सम्बन्ध में लेखन (Writing on Women)	87
13.	बच्चों के संबंध में लेखन (Writing on Children)	93
14.	किशोर, युवा और बुजुर्ग वर्ग के लिए लेखन (Writing for Teens, Young and Old Class)	99
15.	शहरी वर्ग के लिए लेखन (Writing for Urban Class)	104
16.	ग्रामीण वर्ग के लिए लेखन (Writing for Rural Class)	110
साहित्यिक लेखन, साक्षात्कार और व्यक्ति-चित्र (Literary Writing, Interviews and Personal Images)		
17.	पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं की समीक्षा (Review of Journals, Books and Papers)	116
18.	नाट्य प्रस्तुतियों, फिल्मों और कला प्रदर्शनियों की समीक्षा (Review of Theatrical Production, Films and Art Exhibitions)	121
19.	साक्षात्कार : तैयारी, संपादन और संयोजन (Interview: Preparation, Editing and Composition)	127
20.	व्यक्ति-चित्र (Profiles)	134



**Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers**

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

समाचार पत्र और फीचर लेखन
(Newspaper and Feature Writing)

B.H.D.G.-173

समय : 3 घण्टे]

[अधिकतम अंक : 100

नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

प्रश्न 1. समाचार लेखन की प्रक्रिया और शैलियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-2, पृष्ठ-10, 'समाचार लेखन की प्रक्रिया और शैली'

प्रश्न 2. संपादकीय पृष्ठ की प्रकृति को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-3, पृष्ठ-18, 'संपादकीय पृष्ठ की प्रकृति'

प्रश्न 3. समुदाय संबंधी फीचर का महत्त्व बताते हुए उसके प्रमुख क्षेत्रों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-11, पृष्ठ-81, 'समुदाय के लिए लेखन का महत्त्व', पृष्ठ-82, 'समुदाय संबंधी लेखन के विभिन्न क्षेत्र'

प्रश्न 4. किसी एक प्रसिद्ध मेले पर एक फीचर लेख तैयार कीजिए।

उत्तर-पुष्कर ऊँट महोत्सव दुनिया के सबसे बड़े ऊँट व्यापार मेलों में से एक है। हर साल पुष्कर ऊँट मेले के दौरान 30,000 से ज्यादा ऊँटों का व्यापार होता है। मवेशियों और ऊँट व्यापार के अलावा पुष्कर ऊँट मेले में समानांतर रूप से लोक संगीत और नृत्य, जादू का खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम और प्रतियोगिताओं का आयोजन होता है।

अजमेर से लगभग 11 कि.मी. दूर हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थ स्थल पुष्कर है। यहाँ पर कार्तिक पूर्णिमा को मेला लगता है, जिसमें बड़ी संख्या में देशी-विदेशी पर्यटक भी आते हैं। पुष्कर मेले का एक रोचक अंग ऊँटों का क्रय-विक्रय है। निस्संदेह अन्य पशुओं का भी व्यापार किया जाता है, परन्तु ऊँटों का व्यापार ही यहाँ का मुख्य आकर्षण होता है। मीलों दूर से ऊँट व्यापारी अपने पशुओं के साथ में पुष्कर आते हैं। यह सम्भवतः ऊँटों का संसार भर में सबसे बड़ा मेला होता है। इस दौरान लोग ऊँटों की सवारी कर खरीददारों को अपनी ओर लुभाते हैं।

पुष्कर में सरस्वती नदी के स्नान का सर्वाधिक महत्त्व है। यहाँ यहाँ पर वह पाँच नामों से बहती है। पुष्कर स्नान कार्तिक पूर्णिमा को सर्वाधिक पुण्यप्रद माना जाता है। यहाँ प्रतिवर्ष दो विशाल मेलों का आयोजन किया जाता है।

पुष्कर मेला कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक लगता है। दूसरा मेला वैशाख शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक रहता है।

मेलों के रंग राजस्थान में देखते ही बनते हैं। ये मेले मरुस्थल के गाँवों के कठोर जीवन में एक नवीन उत्साह भर देते हैं। लोग रंग-बिरंगे परिधानों में सजखधजकर जगह-जगह पर नृत्य गान आदि समारोहों में भाग लेते हैं। यहाँ पर काफी मात्रा में भीड़ देखने को मिलती है। लोग इस मेले को श्रद्धा, आस्था और विश्वास का प्रतीक मानते हैं।

पुष्कर मेला थार मरुस्थल का एक लोकप्रिय व रंगों से भरा मेला है। यह कार्तिक शुक्ल एकादशी को प्रारम्भ हो कार्तिक पूर्णिमा तक पाँच दिन तक आयोजित किया जाता है। मेले का समय पूर्ण चन्द्रमा पक्ष, अक्टूबर-नवम्बर का होता है। पुष्कर झील भारतवर्ष में पवित्रतम स्थानों में से एक है। प्राचीनकाल से लोग यहाँ पर प्रतिवर्ष कार्तिक मास में एकत्रित हो भगवान ब्रह्मा की पूजा उपासना करते हैं।

एक तरफ तो मेला देखने के लिए विदेशी सैलानी बड़ी संख्या में पहुँचते हैं, तो दूसरी तरफ राजस्थान व आसपास के तमाम इलाकों से आदिवासी और ग्रामीण लोग अपने-अपने पशुओं के साथ मेले में शरीक होने आते हैं। मेला रेत के विशाल मैदान में लगाया जाता है।

आम मेलों की ही तरह ढेर सारी कतार की कतार दुकानें, खाने-पीने के स्टाल, सर्कस, झूले और न जाने क्या-क्या। ऊँट मेला और रेगिस्तान की नजदीकी है इसलिए ऊँट तो हर तरफ देखने को मिलते ही हैं। लेकिन कालांतर में इसका स्वरूप एक विशाल पशु मेले का हो गया है, इसलिए लोग ऊँट के अलावा घोड़े, हाथी और बाकी मवेशी भी बेचने के लिए आते हैं। सैलानियों को इन पर सवारी का लुत्फ मिलता है। लोक संस्कृति व लोक संगीत का शानदार नजारा देखने को मिलता है।

शाम का खास आकर्षण तो यहाँ आयोजित होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। इनमें पारंपरिक लोक नर्तक और नर्तकियां लोक संगीत की धुन पर जब थिरकते हैं, तो एक अलग ही समां बंध जाता है। घूमर, कालबेलिया, गेर, मांड, काफी घोड़ी और सपेरा

नृत्य जैसे लोकनृत्य देख पर्यटक भी झूम उठते हैं। तमाम पर्यटक इन कार्यक्रमों का आनंद लेने से पूर्व सरोवर के घाटों पर जाते हैं। जहां उस समय संध्या आरती और सरोवर में दीपदान का समय होता है। हरे पत्तों को जोड़कर उनके मध्य पुष्प एवं दीप रखकर जल में प्रवाहित कर दिया जाता है। इसे ही दीपदान कहते हैं। जल पर तैरते सैकड़ों दीपक और पानी में टिमटिमाता उनका प्रतिबिंब झिलमिल सितारों जैसा प्रतीत होता है।

घाटों पर की गई लाइटिंग इस मंजर को और भी अद्भुत बना देती है। पुष्कर मेले में देश-विदेश के सैलानियों की भागीदारी इतने बड़े पैमाने पर होती है कि वहां की तमाम आवासीय सुविधाएं कम पड़ जाती हैं। राजस्थान पर्यटन विकास निगम द्वारा उस समय विशेष रूप से एक पर्यटक गांव स्थापित किया जाता है। वहां सर्वोत्तम तम्बू में ठहरने की अच्छी व्यवस्था होती है। इनमें पर्यटकों के लिए सभी जरूरी सुविधाएं होती हैं। इस पर्यटक ग्राम में ठहरना भी अपने आपमें अलग अनुभव होता है। इस तरह की तमाम विशेषताओं के कारण पुष्कर मेले का भ्रमण पर्यटकों के लिए यादगार बन जाता है।

प्रश्न 5. अपने किसी प्रिय अभिनेता का व्यक्तिचित्र तैयार कीजिए।

उत्तर—अल्लू अर्जुन को बन्नी आदि नामों से जाना जाता है। इनका जन्म 8 अप्रैल 1983 को कापू समुदाय में हुआ। यह एक भारतीय फिल्म अभिनेता हैं और तेलुगू फिल्मों के लिए काम करते हैं। अल्लू अर्जुन, निर्माता अल्लू अरविंद के बेटे हैं हालांकि अन्य उल्लेखनीय रिश्तेदारों में चाचा चिरंजीवी और पवन कल्याण और चचेरे भाई राम चरण तेजा शामिल हैं।

इन्हें ऐसी फिल्मों के लिए जाना जाता है, जिनका उद्देश्य पारिवारिक दर्शक होते हैं। अल्लू अर्जुन ने अपने अभिनय के लिए प्रमुख रूप से फिल्मफेयर और नंदी पुरस्कार जीता है। अल्लू अर्जुन ने के. राघवेंद्र राव के गंगोत्री (2003) से अपने अभिनय कैरियर की शुरुआत की और फिर 2004 में रोमांस फिल्म आर्या के मुख्य किरदार रहे, जिसमें उन्होंने मुख्य अभिनेत्री से 'एक तरफा प्यार' करने वाले एक छात्र की भूमिका निभाई। हालांकि उनकी प्रारंभिक फिल्मों में ही उन्होंने अपने प्रशंसकों को स्थापित कर लिया था और हाल ही की उनकी फिल्मों में 2004 की हिट फिल्म आर्या की सिक्वेल आर्या 2 में भूमिका के साथ अल्लू अर्जुन के स्टाइलिश अवतार पर ध्यान केंद्रित किया। हालांकि हाल ही में सफलता प्राप्त वेदम में पांच मुख्य किरदारों में एक मुख्य किरदार किया है। उनकी सभी फिल्मों को मलयालम में डब किया गया है, जिसके चलते वे मलयालम सिनेमा में काफी लोकप्रिय हो गए हैं, साथ ही उनके कुछ फिल्मों को तमिल में भी डब किया गया है।

2005 में उनकी तीसरी फिल्म बन्नी को जारी किया गया। इस फिल्म ने भी अच्छी सफलता हासिल की। उनकी लगातार तीन फिल्मों में हिट रही। उनकी चौथी फिल्म हैप्पी को 2006 में जारी किया गया जो कि बॉक्स ऑफिस पर औसत रही। हालांकि अमेरिका में भारतीय फिल्म स्क्रीन में एक पर्याप्त लाभ अर्जित करने में कामयाब रही।

2007 में उनकी पांचवीं फिल्म देसमुदुरु आर्ट, जिसका निर्देशन पुरी जगन्नाथ ने किया है, यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर काफी हिट साबित हुई और टॉलीवुड में उस वर्ष की पहली हिट रही। इस फिल्म ने रिलीज होने के पहले सप्ताह ही 12.58 करोड़ की कमाई की और टॉलीवुड में सिक्स पैक बनाने वाले वे पहले अभिनेता बने। इसी वर्ष उनके चाचा चिरंजीवी की फिल्म 'शंकर दादा जिंदाबाद' में एक अतिथि भूमिका में दिखाई दिए।

मई 2008 में, उनकी छठी फिल्म परगु को जारी किया गया, जिसके निर्देशक भास्कर हैं। अल्लू अर्जुन की सभी फिल्मों को मलयालम में अनुवाद और डब किया गया है। देसामुदुदु को हीरो नाम दिया गया, परगु का नाम बदल कर कृष्णा रखा गया और गंगोत्री का नाम बदलकर सिम्हाकुट्टी (लायनक्लब) किया गया। इसके कारण केरल राज्य में उनके लिए दर्शकों को सुलभ बना दिया, जहां उन्हें काफी लोकप्रियता प्राप्त हुई।

सुपरस्टार अल्लू अर्जुन और रश्मिका मंदाना की फिल्म 'पुष्पा द राइज' काफी हिट गई थी। इस फिल्म को बॉक्स ऑफिस पर जबरदस्त रिस्पॉन्स मिला था। फिल्म ने शानदार प्रदर्शन किया था। साथ ही खूब तारीफें भी बटोरी थी। फिल्म की स्टोरी के साथ-साथ इसके गाने भी काफी लोकप्रिय हुए थे।

अल्लू अर्जुन तेलुगु फिल्मों के सबसे पॉपुलर अभिनेताओं की लिस्ट में टॉप पर विराजमान है। इनकी हर फिल्म सिनेमाघरों में ब्लॉकबस्टर साबित होती हैं। साल 2022 में आई 'पुष्पा द राइज' के बाद अल्लू अर्जुन एक पैन इंडिया स्टार बन गए हैं। दर्शकों को पर्दे पर अल्लू अर्जुन का स्टाइल, दमदार पर्सनेलिटी और शानदार एक्टिंग बेहद पसंद आते हैं।

अल्लू अर्जुन के दादा जी अल्लू रामलिंगय्या भी फिल्म से जुड़े थे। उन्होंने तमिल और तेलुगु फिल्मों में कॉमेडी अभिनेता के तौर पर काफी समय तक काम किया था। इसके अलावा अल्लू के दो भाई हैं उनका नाम शिरीष और इनके दूसरे भाई का नाम अल्लू वेंकटेश है। इनकी मां एक हाउस वाइव हैं। फैंस प्यार से अभिनेता को 'बनी' कहकर भी बुलाते हैं।

चेन्नई में स्थित सेंट पैट्रिक स्कूल से अल्लू अर्जुन ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा पूरी की। अपनी प्रारंभिक एजुकेशन इस स्कूल से करने के बाद ग्रेजुएशन की डिग्री के लिए अल्लू अर्जुन हैदराबाद चले गए और उन्होंने हैदराबाद जाने के बाद एमएसआर कॉलेज में एडमिशन लिया और वहीं से इन्होंने अपने ग्रेजुएशन की पढ़ाई पूरी की। कॉलेज में ही अल्लू अर्जुन ने मार्शल आर्ट और जिमनास्टिक की ट्रेनिंग ली।

तेलंगाना के एक बड़े बिजनेसमैन चंद्रशेखर रेड्डी की बेटी स्नेहा रेड्डी से अल्लू अर्जुन ने साल 2011 में 6 मार्च को हिंदू रीति-रिवाज से शादी की थी। स्नेहा से इनकी मुलाकात एक शादी में हुई थी। ये मुलाकात जल्द ही दोस्ती में बदली और दोस्ती प्यार में। आखिर में दोनों ने जीवन भर साथ रहने का फैसला किया और अब ये बेटे अयान और बेटी अरहा के माता-पिता हैं।

आज की तारीख में अल्लू अर्जुन सफलता की गारंटी का नाम है। उन्हें अगर फिल्म में लिया तो उसके ब्लॉकबस्टर होने की पूरी

Sample Preview of The Chapter

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

समाचार पत्र और फीचर लेखन (Newspaper and Feature Writing)

समाचार पत्र और फीचर लेखन
(Newspaper and Feature Writing)

समाचार पत्रों की दुनिया (The World of Newspapers)



परिचय

हम जिस समाज, देश, दुनिया में रहते हैं, उससे अवगत रहना जरूरी होता है। हर व्यक्ति यह जानना चाहता है कि उसके आस-पास क्या चल रहा है। देश-दुनिया की घटनाओं, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक हलचलों के बारे में जानने के लिए हर व्यक्ति उत्सुक रहता है। सामाजिक घटनाएं समाज व व्यक्तियों से संबंधित होती हैं, जिनका प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उस पर असर होता है। बहुत सारी ऐसी खबरें होती हैं, जिनको पढ़कर लोग अपने भविष्य के प्रति सचेत होते हैं। हालांकि आज के युग में टेलीविजन व इंटरनेट अधिक प्रचलित हो गया है, जिन पर हर प्रकार के समाचार किसी भी समय सुने जा सकते हैं, किंतु फिर भी अखबार समाचारों के लिए इनमें सबसे महत्वपूर्ण व सशक्त माध्यम है, क्योंकि जितने विस्तार से खबरों को अखबार द्वारा प्रस्तुत किया जाता है, उतना दूसरे माध्यमों से संभव नहीं है। अखबार न केवल खबरों का माध्यम है, अपितु इसमें और भी बहुत-सी दिलचस्प सामग्रियाँ होती हैं। कभी-कभी हम यह भी जानने के लिए उत्सुक होते हैं कि अखबारों की शुरुआत कैसे हुई? इसमें छपने वाली खबरें तथा दिलचस्प सामग्रियाँ कौन और कैसे एकत्रित करता है। इस अध्याय के माध्यम से कुछ ऐसी ही पहेलियों को सुलझाने का प्रयास किया गया है।

अध्याय का विहंगावलोकन

संचार माध्यमों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

सर्वप्रथम समाचार पत्रों की आवश्यकता अंग्रेजी शासन के समय में पड़ी, जब इस माध्यम से लोगों में जागरूकता पैदा की गई। समाचार पत्रों के माध्यम से लोगों के मन में अपनी संस्कृति, अपने समाज की परंपरा के प्रति जागरूकता पैदा करना ही इनका उद्देश्य था। यही कारण था कि अंग्रेजी शासकों ने अनेक मौकों पर समाचार पत्रों पर पाबंदी लगाई। लेकिन इन पाबंदियों ने लोगों को और अधिक उत्साहित किया। 29 जनवरी, 1780 को बंगाल गजट नामक पहला पत्र निकला, किंतु लॉर्ड वेलेजली ने समाचार पत्रों पर प्रतिबंध लगा दिया, जिससे भारतीय पत्रकारिता का लोप होने लगा। 1818 में लॉर्ड हेस्टिंग्स जब भारत आये, तो उन्होंने इस प्रतिबंध को हटाया जिससे अंग्रेजी, हिंदी और बंगला भाषा में पत्र निकलने शुरू हो गए। 1819 में 'संवाद कौमुदी' नामक पत्र का प्रकाशन शुरू हुआ, जो सबसे शक्तिशाली बनकर उभरी। किंतु 1823 में सर एडम्स गवर्नर जनरल बनने पर ईस्ट इंडिया कंपनी की अनुमति पर यह नियम लागू किया गया कि कोई भी अखबार सरकार की अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता और प्रेस भी

2/NEERAJ : समाचार पत्र और फीचर लेखन

नहीं लगाई जा सकती। इस नियम के कारण सभी महत्वपूर्ण अखबार एक-एक करके बंद होने लगे।

परंतु इस सबके बावजूद भी युगल किशोर (शुक्ल) ने हिन्दी का पहला पत्र 'उदंत मार्तंड' का प्रकाशन शुरू किया, किंतु प्रोत्साहन न मिलने के कारण 11 दिसंबर, 1827 को यह बंद हो गया। इसके बाद दूसरा पत्र निकला जो हिंदी, बांग्ला और फारसी तीनों भाषाओं में निकलता था। इसका नाम बंगदूत था, किंतु यह भी केवल एक वर्ष बाद ही बंद हो गया। 1845 में उत्तर-प्रदेश से हिंदी का पहला अखबार प्रारम्भ हुआ। इसके साथ ही 'बनारस गजट' नाम से उर्दू का अखबार भी निकलता था। बनारस से ही 1850 में हिंदी का दूसरा पत्र 'सुधाकर' शुरू हुआ। भाषा और विषय-वस्तु की दृष्टि से यह इतना अधिक लोकप्रिय था कि सरकार इसे ग्रामीण स्कूलों में बाँटने के लिए खरीदती थी। यह अखबार शैक्षिक उपकरण व लाभकारी सूचना प्रसारण के रूप में देखा जाने लगा। अंग्रेजी शासन के प्रतिबंधों के बावजूद देश में प्रकाशन का कार्य पनपता रहा और आजादी की लड़ाई में पत्र-पत्रिकाओं ने समाज में जागरूकता पैदा की। आजादी के बाद पत्र-पत्रिकाओं का स्वरूप बदला, किंतु आज भी समाज या देश में आवाज उठाने के लिए सर्वप्रथम समाचार-पत्र या दूसरे संचार माध्यमों का सहारा ही लिया जाता है।

इसके बाद समय में परिवर्तन हुआ और धीरे-धीरे रेडियो व टेलीविजन का प्रसार हुआ, जो दिन-प्रतिदिन नए शिखर पर पहुँचता रहा और आज के युग में यहाँ तक पहुँच गया कि समाचारों का चौबीसों घंटे और पल-पल प्रसारण शुरू हो गया है।

अखबार का स्वरूप

अखबार में केवल समाचार ही नहीं छपते, बल्कि इसमें अनेक ज्ञानवर्द्धक, जानकारीपूर्ण सूचनाएं व संदेश भी प्रकाशित होते हैं, जो हर व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। हालांकि ये सब सूचनाएं टेलीविजन पर भी प्रसारित होती हैं, लेकिन उसमें व्यक्ति अपने मनोरंजक कार्यक्रमों को देखने में अधिक व्यस्त हैं, जबकि समाचार पत्र में हर जानकारी के लिए स्थान निश्चित होता है, जिससे नियमित रूप से अखबार पढ़ने वाले व्यक्ति अखबार से जानकारी आसानी से ले लेते हैं।

अखबार के अंग

हर अखबार में कुछ चीजें अनिवार्य रूप से प्रकाशित होती हैं, जिन्हें अखबार के अंग कहते हैं। इसमें समाचार, संपादकीय, फोटो, फीचर, लेख, कार्टून, ग्राफिक, विज्ञापन आदि शामिल हैं। इसके अलावा अखबार के अनिवार्य अंग हैं—मास्टहेड विंडोज,

प्रिंटलाइन। अखबार के विभिन्न अंगों को रेखांकन के माध्यम से आसानी से समझ सकते हैं—

समाचार पत्र

- मास्टहेड
- संपादकीय
- फीचर साक्षात्कार
- ग्राफिक्स पत्र
- प्रिंट लाईन
- समाचार
- फोटो
- लेख
- कार्टून
- विज्ञापन
- मौसम और बाजार भाव

हर अखबार में ये चीजें अपने-अपने तरीके से सजी होती हैं। आइये, इन अंगों को विस्तार से जानें।

मास्टहेड और विंडोज—पहले पृष्ठ पर अखबार का नाम जो मोटे अक्षरों में लिखा होता है, उसे मास्टहेड कहते हैं। कई अखबारों में मास्टहेड के साथ कोई प्रतीक चिह्न भी छपा होता है, जैसे 'राष्ट्रीय सहारा' के नाम के साथ तिरंगा छपा होता है। मास्टहेड के नीचे कुछ चित्रों के साथ प्रमुख खबरों की सूचना प्रकाशित होती है, जिसे विंडोज कहते हैं। इसके माध्यम से अखबार के अंदर पन्नों पर प्रकाशित होने वाली प्रमुख खबरों की जानकारी मिल जाती है।

समाचार—समाचारों का संकलन एक कठिन कार्य है, क्योंकि समाचार का क्षेत्र बहुत बड़ा है। समाज और जीवन में घटित होने वाली सभी घटनाएं समाचार होती हैं, किन्तु इन सभी घटनाओं को अखबार में नहीं छपा जा सकता, केवल महत्वपूर्ण या जरूरी खबरों को ही अखबार में छपा जाता है। इसके लिए वे विशेष संवाददाताओं, नगर संवाददाताओं, अंशकालिक संवाददाताओं, समाचार एजेंसियों विज्ञप्तियों आदि का सहारा लेते हैं। समाचार को अखबारों में उनकी प्रकृति और क्षेत्र के अनुरूप अलग-अलग श्रेणियों में बाँटा जाता है तथा उसी के आधार पर उन्हें अलग-अलग पृष्ठों और स्थान पर छपा जाता है। समाचारों को मुख्य तौर पर निम्नलिखित रूपों में वर्गीकृत किया जाता है—

समाचार

- | | | | |
|-----------|----------------|-----------------|---------|
| राजनीतिक | सामाजिक | व्यापार/अर्थजगत | खेल |
| राष्ट्रीय | अंतर्राष्ट्रीय | | स्थानीय |

विविध समाचार

- साहित्य
- संस्कृति
- विज्ञान
- पर्यावरण
- अन्य

समाचारों का स्थान इसी आधार पर निर्धारित किया जाता है। अखबार में समाचार देते समय पाठकों की रुचि का ध्यान भी रखा जाता है। ज्यादातर लोग बड़ी खबरें पहले देखना चाहते हैं। इसके अनुसार राजनीतिक, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों से जुड़ी खबरों को पहले पन्ने पर तथा अर्थ जगत, व्यापार और खेल की खबरों को प्रायः अंत के तीन-चार पन्नों पर दिया जाता है। महानगरों का एक बड़ा वर्ग सांस्कृतिक गतिविधियों, फैशन,

खानपान आदि में रुचि रखता है। अतः ऐसी हलचलों की सूचना महानगरों के अखबारों में मिलती हैं। कई अखबार यह परिशिष्ट रोज निकालते हैं, तो कुछ के दिन निर्धारित हैं। अखबारों को प्रस्तुत करते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि पाठक कम समय में सभी महत्वपूर्ण खबरों पर नजर डाल सकें। खबरों के प्रमुख अंग इस प्रकार हैं—

समाचार

मुख्य शीर्षक उपशीर्षक समाचार स्रोत इंट्रो
ब्योरा बॉक्स मैटर

इन अंगों को इस प्रकार से भी समझ सकते हैं—

समाचार

मुख्य शीर्षक—मुख्य शीर्षक को लिखते समय यह ध्यान रखा जाता है कि इससे खबर का सार पता चले।

उपशीर्षक—उपशीर्षक का उद्देश्य मुख्य शीर्षक की बातों को संक्षेप में विस्तार से बताना है, जिससे समाचार के मुख्य बिंदुओं को बताया जा सके।

समाचार स्रोत—इससे पाठकों को यह पता चल सके कि खबर किस माध्यम से आई है।

इंट्रो—इंट्रो में समाचार की मुख्य बातें या कह सकते हैं कि समाचार की जानकारी दी जाती है।

ब्योरा—इसमें समाचार की घटनाओं को विस्तार से बताया जाता है।

बॉक्स मैटर—इसमें मुख्य समाचार से जुड़ी आनुषंगिक घटनाओं, प्रसंगों, बातों का उल्लेख किया जाता है।

संपादकीय—संपादकीय से किसी भी घटना या फैसले पर अखबार के विचार पता चलते हैं। आमतौर पर संपादकीय टिप्पणियाँ समसामयिक घटनाओं या सरकार के फैसलों, नीतियों आदि पर अखबार की प्रतिक्रिया होती है। संपादकीय संपादक या उनकी ओर से सहायक संपादक लिखते हैं। अपने विचार व्यक्त करने के लिए ये लेख बाहर के लोग भी लिख सकते हैं।

फोटो—अखबारों, पत्रिकाओं में फोटो का प्रयोग केवल साज-सज्जा के लिए नहीं होता, अपितु यह बहुत-से महत्वपूर्ण तथ्यों, घटनाओं को प्रस्तुत करती हैं। एक कहावत है कि एक अच्छी तस्वीर हजार शब्दों के समान होती है। किसी घटना से संबंधित तस्वीर को देखकर हमारी जिज्ञासा उसी प्रकार बढ़ती है, जैसे किसी समाचार को पढ़ने के पश्चात बढ़ती है। चूंकि फोटो पत्रकारिता का महत्वपूर्ण भाग है अतः एक फोटोग्राफर को संवाददाता की तरह ही सजग रहना पड़ता है और जोखिम उठाकर भी घटना की तस्वीरें लेनी पड़ती हैं। समाचार पत्रों की तुलना में इलेक्ट्रॉनिक माध्यम में तस्वीरों का अधिक महत्व होता

है। अखबार में समाचार लिखित रूप में होने के कारण उसमें तस्वीरों की अधिक गुंजाइश नहीं होती, किंतु यदि फोटोग्राफर संजीदगी से और सभी पक्षों को ध्यान में रखकर फोटो खींचता है, तो इस प्रकार की तस्वीर का प्रभाव इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की चित्र शृंखला से कहीं अधिक होता है। जो अखबार अधिक पन्नों के होते हैं, वे अपने अखबार में चित्र शृंखला के रूप में तस्वीरें छापते हैं, जिसे फोटो फीचर कहा जाता है। जैसे भूकंपों में हुई त्रासदी की तस्वीरें, या अभी हाल में गैंगरेप के विरुद्ध हुए आंदोलन की तस्वीरें जो जनता को झकझोर देती हैं। फोटो संकलन के लिए अखबार विभिन्न देशी-विदेशी समाचार एजेंसियों से भी मदद लेते हैं।

फीचर—फीचर भी प्रकृति से लेख ही होते हैं, किंतु यह मनोरंजक, ज्ञानवर्धक, जागरूकता पैदा करने के मकसद से लिखे जाते हैं, इसलिए इनके लेखन की शैली संपादकीय पृष्ठ के लेखों से भिन्न होती है। इनकी भाषा में रवानगी, काव्यमयता तथा कभी-कभी नाटकीयता और चित्रात्मकता का पुट भी होता है। फीचर परिशिष्ट पहले ज्यादातर रविवार के दिन प्रकाशित हुआ करता था। किंतु अब प्रतिदिन किसी न किसी क्षेत्र से संबंधित फीचर प्रकाशित होता है। इसके अलावा शिक्षा, कैरियर, विज्ञान, स्वास्थ्य, रहन-सहन, बदलती जीवन-शैली, फैशन, युवा वर्ग, गृह सज्जा, साहित्य-संस्कृति, खेल, राजनीति आदि से संबंधित फीचर अलग-अलग दिन अपने निर्धारित समय पर निकलते हैं। फीचर का उद्देश्य लोगों में जागरूकता पैदा करना, सूचनाएं देना और मनोरंजन प्रदान करना है।

साक्षात्कार—साक्षात्कार का अर्थ है किसी विशेष मुद्दे पर किसी व्यक्ति से बातचीत करना। समाचारों के बीच में संबंधित घटना की पुष्टि के लिए बातचीत करनी पड़ती है, ताकि महत्वपूर्ण पक्षों को उजागर किया जा सके। साक्षात्कार कई प्रकार के हो सकते हैं। किसी घटना के संबंध में जानकारी के लिए की गई बातचीत को हम साक्षात्कार नहीं कह सकते। साक्षात्कार एक स्वतंत्र विधा है। इसमें मुख्य हैं—मुद्दों, विषय-वस्तु पर आधारित साक्षात्कार, किसी प्रसिद्ध व्यक्ति से उसके जीवन और योगदान के बारे में साक्षात्कार। साक्षात्कार प्रायः स्वतंत्र रूप से प्रकाशित किये जाते हैं।

कार्टून—कार्टून का अर्थ है—व्यंग्य चित्र। यह बहुत खूबसूरत कला है, जिसमें ऐसी तीखी बात कही जाती है, जो पूरे लेख या संपादकीय टिप्पणी में नहीं कही जाती। अखबारों में प्रकाशित होने वाले कार्टून मुख्य तौर पर दो प्रकार के होते हैं—एक समाचार पर आधारित और दूसरे मनोरंजक। समाचारों पर आधारित कार्टून एक बॉक्स वाले होते हैं और आमतौर पर अखबारों के

4/NEERAJ : समाचार पत्र और फीचर लेखन

मुख्य पृष्ठ या कभी-कभी संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित किये जाते हैं। कार्टून के माध्यम से कई बार बिना कुछ लिखे बड़ी से बड़ी बात कह दी जाती है। कार्टून बनाना एक कला है, जिसमें आर.के. लक्ष्मण अंग्रेजी के, राजेंद्र घोड़पकर और इरफान हिंदी के जाने-माने कार्टूनिस्ट हैं।

ग्राफिक्स—ग्राफिक्स सूचनाओं व चित्रों का मिला-जुला रूप होता है। इसमें सूचनाएं चित्रों के साथ दी जाती हैं। ग्राफिक्स के चित्र कैमरे द्वारा खींचे गए भी हो सकते हैं तथा कल्पना द्वारा बनाए गए भी। ग्राफिक्स के द्वारा मुख्य रूप से घटना या विषय से संबंधित सूचनाएं और आंकड़े प्रस्तुत किये जाते हैं।

विज्ञापन—विज्ञापन कोई विशेष जानकारी या खबर नहीं होते, परंतु फिर भी अखबारों व पत्रिकाओं में विज्ञापन भरपूर होते हैं, क्योंकि ये इनकी आय का माध्यम है। विज्ञापन एकत्र करने के लिए अखबार में कर्मचारी और एजेंट होते हैं। विज्ञापन के द्वारा किसी वस्तु, उत्पाद या योजनाओं-नीतियों-कार्यक्रमों की जानकारी लोगों तक पहुँचाना होता है। इसके लिए इन्हें आकर्षक रूप में व आकर्षक कथनों के साथ प्रस्तुत किया जाता है। विज्ञापन न केवल अखबारों की आय का साधन है, इससे दूसरे लोगों को भी बहुत लाभ है। विज्ञापन के जरिये लोगों को घर बैठे बहुत-सी जानकारियाँ मिल जाती हैं, जिससे उनकी समस्याओं का समाधान होता है। जैसे यदि कोई पिता अपनी बेटी के लिए वर ढूँढ रहा है तो वह अखबार में प्रकाशित होने वाले विज्ञापन इसमें उनकी सहायता कर सकते हैं। ऐसी और भी बहुत-सी जानकारियाँ हमें संचार माध्यमों से मिलती हैं। विज्ञापनों का एक उद्देश्य विभिन्न समस्याओं के प्रति लोगों को जागरूक करना भी होता है, जैसे बढ़ती जनसंख्या को रोकने के लिए नसबंदी या गर्भ निरोधक, एड्स की रोकथाम संबंधी जागरूकता के विज्ञापन, बच्चों के स्वास्थ्य संबंधी टीके, कृषि संबंधी योजनाएँ और कार्यक्रमों की घोषणाएँ आदि से संबंधित विज्ञापन आदि। विज्ञापन कई प्रकार के होते हैं। कुछ विज्ञापन अखबार के पूरे पृष्ठ पर छपते हैं या शृंखलाबद्ध छपते हैं। इनमें बड़ी कंपनियों के उत्पाद तथा विपणन योजनाओं की जानकारी होती है। कुछ विज्ञापन आधे पेज पर या इससे छोटे होते हैं, इनमें कंपनियों के अलावा सरकार की तरफ के विज्ञापन भी होते हैं। इनमें चित्रों के साथ आकर्षक कथन भी दिये जाते हैं। इसके अलावा बहुत सारे विज्ञापन मझोले आकार के होते हैं। इनके लिए कॉलम या सैंटीमीटर के हिसाब से जगह निर्धारित की जाती है। अखबार में सबसे अधिक छपने वाले विज्ञापन वर्गीकृत विज्ञापन होते हैं, जो तीन-चार-पाँच पंक्तियों वाले होते

हैं। इनमें नौकरियों से लेकर वैवाहिक विज्ञापन तक शामिल होते हैं। इनमें सूचनाएं संक्षेप में दी जाती हैं तथा चित्रों का प्रयोग नहीं किया जाता।

पत्र—पत्र के माध्यम से पाठकों की सहभागिता तो बढ़ती है, साथ ही संचार माध्यमों को कई दिशा-विदेश भी प्राप्त होते हैं। इसी कारण से हर समाचार माध्यम पाठकों की प्रतिक्रियाएँ आमंत्रित करता रहता है और उन्हें प्रमुखता से प्रकाशित, प्रसारित करता है। पाठकों के लेखों का एक महत्वपूर्ण स्थान होता है, क्योंकि पत्रों के माध्यम से कई बार उनमें छपने वाले लेख या संपादकीय टिप्पणियों से भी अधिक महत्वपूर्ण बातें उभर कर सामने आ जाती हैं।

मौसम और बाजार भाव—अखबार हर प्रकार की जानकारी अपने पाठकों को देता है। इसमें व्यापारियों के लिए सर्राफा, मुद्रा और शेयर बाजार के भाव आदृती सभी को मदद मिलती है। इसी प्रकार जिनके व्यापार पर मौसम का प्रभाव होता है, उन्हें मौसम की जानकारी प्राप्त करनी होती है, जैसे किसानों को मौसम के बारे में जानना अति आवश्यक है या एक मछुआरे को समुद्री तूफान, ज्वारभाटा आदि की सूचनाएँ बहुत उपयोगी रहती हैं।

प्रिंट लाइन—अखबार की सभी महत्वपूर्ण जानकारियों के साथ हमें यह भी पता होना चाहिए कि उसका संपादक कौन है, प्रकाशक कौन है, कहाँ से प्रकाशित हुआ है? इसके फोन नम्बर क्या हैं? इसका कार्यालय कहां है? यह सारी सूचना अखबार के आखिरी पन्ने पर सबसे नीचे प्रकाशित होती है, जिसे प्रिंट लाइन कहा जाता है। पत्रिकाओं में आमतौर पर यह सूचना सूची वाले पन्ने पर प्रकाशित होती है। प्रिंट लाइन प्रकाशित करना कानूनी रूप से अनिवार्य होता है।

समाचार माध्यमों में कामकाज

समाचार संकलन तथा संपादन का तरीका सभी समाचार माध्यमों में एक जैसा ही होता है। अखबारों में मुद्रित रूप व इलेक्ट्रॉनिक माध्यम दोनों का प्रयोग होता है। किंतु दोनों माध्यमों में समाचारों या फीचर आदि के प्रस्तुतिकरण का तरीका अलग होता है। अखबारों-पत्रिकाओं के कार्यों के लिए अलग-अलग विभाग बने होते हैं। समाचारों के संकलन के लिए संवाददाताओं का अलग विभाग होता है। इसी प्रकार समाचारों के संकलन, स्थानीय खबरों ब्यूरो, समाचार संपादन आदि के लिए अलग-अलग विभाग होते हैं। आजकल कार्य का ढांचा थोड़ा बदल गया है क्योंकि अखबारी पन्ने कम्प्यूटर पर बनने लगे हैं, जिससे काम में बहुत आसानी रहती है। समाचारों के स्थान निर्धारण, फोटो के लिए जगह बनाने और पेज बनवाने की जिम्मेदारी समाचार